" विंध्य क्षेत्र की जनजाति बैगा की अर्थव्यवस्था और समाज का ऐतिहासिक पुनरावलोकन"

प्रो0 नसरीन बेगम
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवंपुरातत्व विभाग
हमीदिया गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
(संघटक महाविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,)
प्रयागराज उ.प्र.

सारांश

प्रस्तुत शोध का केंद्र बिंदु उत्तर प्रदेश के अति-पिछड़े जनपद सोनभद्र की **बैगा जनजाति** है। बैगा जनजाति को भारत सरकार द्वारा 'विशेष पिछड़ी जनजाति' की श्रेणी में रखा गया है। यह समुदाय अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान, 'बेवर' कृषि और औषधीय ज्ञान के लिए विख्यात है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में इस जनजाति के सामाजिक-आर्थिक स्वरूप में आ रहे परिवर्तनों और उनकी ज्वलंत समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।अध्ययन हेतु सोनभद्र जिले की **दुद्धी तहसील** के छह प्रमुख बैगा बाहुल्य ग्रामों–**नेमना, बैरखड़, कुदरी, अजनीगुरा, दीघुल और गरदरवा**–का चयन किया गया। शोध में **'अनुपातिक दैव निदर्शन विधि'** (Proportional Random Sampling) का प्रयोग करते हुए कुल 1,427 परिवारों में से **30% (435 परिवारों)** का सर्वेक्षण किया गया। डेटा संग्रहण हेतु प्राथमिक स्रोतों के रूप में साक्षात्कार अनुसूची, व्यक्तिगत अवलोकन और वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया।

बैगा समुदाय में आज भी संयुक्त परिवार और उपजाति अंतर्विवाह की परंपरा सुदृढ़ है। महिलाओं में गोदना (Tattoo) कला और पुरुषों में 'पुरोहिती' का विशेष महत्व है।
बैरखड़ जैसे ग्रामों में होली पर्व की विशिष्ट परंपरा (5 दिन पूर्व मनाना) और 'कर्मा' जैसे लोक नृत्यों का अस्तित्व उनकी जीवंत संस्कृति को दर्शाता है।

अध्ययन में पाया गया कि बैगा परिवारों की 68% आय केवल भोजन पर व्यय होती है। 'बेवर' कृषि पर प्रतिबंध के कारण वे भूमिहीन मज़दूर के रूप में साहूकारों के शोषण (ऋणग्रस्तता) का शिकार हो रहे हैं।
जागरूकता का अभाव है।साक्षरता दर (विशेषकर महिलाओं में ~15%) अत्यंत चिंताजनक है, जिसके कारण सरकारी योजनाओं और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उन तक पूर्णतः नहीं पहुँच पा रहा है।

शोध से यह निष्कर्ष निकालता है कि बैगाओं का विकास उनकी सांस्कृतिक मौलिकता को संरक्षित रखते हुए किया जाना चाहिए। 'वनाधिकार पट्टों' का वितरण, स्थानीय स्तर पर 'कोदो-कुटकी' और 'शहद' प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना, तथा मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों का संचालन उनके उत्थान हेतु अनिवार्य कदम हैं।

प्रमुख शब्द : बैगा जनजाति, सोनभद्र, बेवर कृषि, सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन, सांस्कृतिक पहचान, वनाधिकार।

प्रस्तावना

विंध्य क्षेत्र मध्य भारत का वह ऐतिहासिक और भौगोलिक भू-भाग है, जो अपनी सघन वन संपदा और प्राचीन पर्वत श्रृंखलाओं के लिए जाना जाता है। लगभग **38,370 वर्ग किलोमीटर** में फैले इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी मुख्य रूप से **उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों** से निर्मित है। यह क्षेत्र न केवल जैव विविधता

की दृष्टि से संपन्न है, बल्कि यह जनजातीय समुदायों का प्राचीन काल से ही सुरक्षित आश्रय स्थल रहा है। विंध्य की पहाड़ियों में निवास करने वाली जनजातियों का इतिहास उनकी स्वायत्तता और प्रकृति के प्रति उनके अनन्य प्रेम का प्रमाण है। यहाँ की जनजातीय आबादी (28%) क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को परिभाषित करती है।

आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव और विकास की अंधी दौड़ में जनजातीय समुदायों का पारंपरिक ढांचा प्रभावित हुआ है। विंध्य क्षेत्र की 30 से अधिक जनजातियाँ, जिनमें **गोंड, बैगा, कोल, पनिका, और खैरवार** प्रमुख हैं, आज अपनी विशिष्ट पहचान, पारंपरिक अर्थव्यवस्था और प्राचीन संरक्षण विधियों के संरक्षण की चुनौती का सामना कर रही हैं। वनों पर उनकी निर्भरता और बदलते परिवेश के बीच का द्वंद्व एक गंभीर शोध का विषय है।

शोध की प्रासंगिकता

यह शोध पत्र उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र क्षेत्र में निवास करने वाली जनजाति बैगा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक, आर्थिक पृष्ठभूमि की विवरण मूलक ऐतिहासिक पुनरावलोकन है। बैगा जनजातीय समुदाय के विषय में किये गये अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि उनका सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन वन व्यवस्था से नियोजित एवं प्रभावित रहा है। आधुनिक औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में जनजाती समुदाय को अपने मूल निवास स्थान से निरन्तर विस्थापित होना पड़ा है। सामान्यतः जनजाति पर्वतीय क्षेत्रों और जंगलों में निवास करती हैं। जनजाति का व्यवसाय मूलतः प्रकृति से सम्बन्धित है। प्राकृतिक व्यवस्था ही उनकी संस्कृति की पोषक है। जनजाति के विस्थापन के कारण उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था में परिवर्तन हो रहा है जिससे उनकी संस्कृति पर भी प्रभाव पड़ रहा है। यह समस्या पूरे भारत में सभी जनजातियों की एक जैसी है।

प्रो. ए. आर. देसाई का दृष्टिकोण-- प्रो. ए. आर. देसाई ने जनजातिय सामान्य लक्षणों पर प्रकाश डाला है जो सभी जनजातियों में पाये जाते हैं। ये सामान्य लक्षण इस प्रकार हैं-

1. वे प्रायः सभ्य जगत से दूर पर्वत तथा जंगलों में दुर्गम स्थानों में निवास करते हैं।
2. ये निग्रोटोज, एस्ट्रोलाइड अथवा मंगोलायड में से एक प्रजातीय समूह से सम्बद्ध है।
3. उनकी अपनी एक जनजातीय भाषा होती है।
4. वे आदिम धर्म को मानते है जो कि सर्वजीववाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है जिसमें भूत-प्रेत तथा आत्माओं की पूजा होती है जिसका महत्वपूर्ण स्थान है।
5. वे जनजातीय व्यवसायों को अपनाते हैं जेसे प्राकृतिक उपयोगी वस्तुओं का संग्रह, शिकार, वन खाद्यान्नों का संग्रह करना आदि।
6. उनकी अपनी सामान्य संस्कृति व सुरक्षात्मक संगठन होते हैं। उनकी मदीरा एवं नृत्य के प्रति विशेष रूचि होती है।
7. उनके समूह का अपना नाम पारस्परिक व्यवहार के नियम और निषेध होते हैं।

शोध की रूपरेखा एवं प्रविधि

शोध परिकल्पना

बैगा जनजाति के ऐतिहासिक तथ्यों और वर्तमान सामाजिक परिवेश के सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तुत की गई हैं:-

- **परिकल्पना-1:** बैगा जनजाति की सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) की दर अत्यंत धीमी है, जिसका मुख्य कारण भौगोलिक पृथक्करण और परंपरावादिता है।
- **परिकल्पना-2:** बैगा समुदाय की पारिवारिक आर्थिक संरचना में पुरुषों की तुलना में महिलाओं का योगदान (वनोपज संग्रहण, श्रम और घरेलू प्रबंधन) अधिक व्यापक और प्रभावी है।
- **परिकल्पना-3:** वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में भी बैगा जनजाति अपनी पारंपरिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने में सफल रही है।

बैगा जनजाति की ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या से परिकल्पना की सत्यता ज्ञात होती है। कुछ परिकल्पनायें निम्न है-

1. उ0प्र0 के सोनभद्र जिले की बैगा जनजाति का सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना।
2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उनकी संस्कृति को आपस में जोड़ना
3. साहित्य का पुर्नरावलोकन करना
4. बैगा जनजाति की सामाजिक गतिशीलता थीमी होती है।
5. पारिवारिक आमदनी में पुरुषों की अपेक्षा गहिलाओं का अधिक गोगदान होता है।
6. बैगा जनजातियों में वर्तमान में भी परम्परागत प्रयाए प्रचलित है।

शोध पद्धति: वर्णनात्मक अनुसंधान

प्रस्तुत शोध कार्य में **'वर्णनात्मक अनुसंधान'** पद्धति का अवलंबन किया गया है। इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य बैगा जनजाति की वर्तमान दशाओं, क्रियाओं और अभिवृत्तियों का व्यवस्थित और वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत करना है।विभिन्न सामाजिक और आर्थिक तत्वों के बीच आपसी संबंधों को खोजने और उनके आधार पर भविष्य की प्रवृत्तियों का आकलन करने का प्रयास है। वर्तमान परिस्थितियों और विशेषताओं का सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है ताकि स्थिति का वास्तविक चित्रण किया जा सके। अनुसंधान की सत्यता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए इसमें **प्राथमिक** और **द्वितीयक** दोनों प्रकार के आंकड़ों का समावेश किया गया है:

1. **साक्षात्कार (Interview):** बैगा परिवारों से प्रत्यक्ष संवाद के माध्यम से उनकी समस्याओं और विचारों को समझना।
2. **अवलोकन (Observation):** उनके निवास क्षेत्र में जाकर उनकी जीवनशैली का प्रत्यक्ष और निष्पक्ष निरीक्षण।
3. **अनुसूची एवं प्रश्नावली (Schedule and Questionnaire):** पूर्व-निर्धारित प्रश्नों के माध्यम से सांख्यिकीय डेटा प्राप्त करना।
4. **अभिलेखीय अध्ययन (Records):** सरकारी पुस्तकालयों, जनगणना रिपोर्टों और ऐतिहासिक अभिलेखों का संदर्भ लेना।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)-- प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से निम्नलिखित उद्देश्यों पर केंद्रित है, जिन्हें सोनभद्र जिले की बैगा जनजाति के गहन विश्लेषण हेतु निर्धारित किया गया है:

- **उद्देश्य 1: सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण का विश्लेषणात्मक अध्ययन** उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में निवास करने वाली बैगा जनजाति की वर्तमान सामाजिक संरचना और उनकी आर्थिक स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन करना। इसके अंतर्गत उनके जीवन स्तर, आय के स्रोतों, शिक्षा,

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं का मूल्यांकन करना है। जनजाती की अर्थव्यवस्था और वनों के बीच विद्यमान प्रत्यक्ष संबंधों का विश्लेषण करना।उनकी सामाजिक संरचना, खान-पान, रीति-रिवाज और धार्मिक मान्यताओं को रेखांकित करना।वन संरक्षण में उनके द्वारा अपनाई गई पारंपरिक एवं वैज्ञानिक विधियों का मूल्यांकन करना।

- **उद्देश्य 2: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक अंतर्संबंधों का विश्लेषण** बैगा जनजाति की गौरवशाली संस्कृति को उसके ऐतिहासिक संदर्भों के साथ जोड़कर देखना। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में उनकी परंपराओं, कला, लोक-जीवन और प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव में आए परिवर्तनों और निरंतरता का अध्ययन करना। जनजाति बैगा के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक निवास स्थानों का अध्ययन करना।
- **उद्देश्य 3: संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)** बैगा जनजाति और जनजातीय संस्कृति पर पूर्व में किए गए विभिन्न शोधों, ग्रंथों, और ऐतिहासिक दस्तावेजों का पुनरावलोकन करना। इसका लक्ष्य वर्तमान शोध कार्य के लिए एक ठोस वैचारिक और सैद्धांतिक आधार तैयार करना है।

साहित्यिक सर्वेक्षण-

प्रस्तुत शोध कार्य के वैचारिक ढांचे को सुदृढ़ करने हेतु पूर्व में किए गए महत्वपूर्ण अध्ययनों का अवलोकन किया गया है। जनजातीय सामाजिक-धार्मिक जीवन और उनके प्राकृतिक परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए निम्नलिखित ग्रंथ मुख्य स्रोत रहे हैं:-

ब्लूम फिल्ड (1778) ने बैगा जनजाति के सम्बन्ध में सर्वप्रथम लिखा है कि "बैगा जंगल काटकर खेती करते ये आजा का कार्य करते है। और जंगली जड़ी बूटी से रोगों का उपचार करते हैं ये लोग बास से चटाई और अन्य वस्तुओं का निर्माण करते है। साथ ही साथ जंगलों से शहद, कन्दमूल और हर्रा इक्कठा करते है तथा शिकार करना और मछली पकड़ने का कार्य करते है।

इसके अतिरिक्त 'मध्य प्रदेश की जनजातियां' (तिवारी और शर्मा, 1995) और 'कोल' (शांडिल्य, 1999) महत्वपूर्ण संदर्भ हैं। 'ट्राइबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट' (भोपाल) के बुलेटिन और एस.के. जैन (1991) की 'डिक्शनरी ऑफ इंडियन फोक मेडिसिन एंड एथ्नोबोटनी' आदिवासियों के औषधीय और प्राकृतिक ज्ञान को समझने में सहायक हैं। मिश्रा (2015, 2017), श्रीवास्तव (2017), सिंह (2014) और द्विवेदी एवं पांडेय (1992) सिंह (2014) दुबे एट अल (2007) वर्मा और खान (1993) के अध्ययन सोनभद्र और विंध्य क्षेत्र के आदिवासियों के पारिस्थितिक संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

कैप्टन थामस (1867)- ने बैगा जनजाति के बारे में लिखा है कि बैंगा जनजाति बहुत ही पिछड़ी अवस्था में है और सभ्य मनुष्य के सम्पर्क में आने से डरती है। कर्नल वार्ड की मछली सेटलमेण्ट रिपोर्ट 1870 से जानकारी मिलती है कि जनजाति जंगलों अवस्था में रहते है और अपने समूह के साथ स्वतंत्र रहना पसन्द करते है।

रमेल आर.वी. एवं हीरालाल (1916) ने द बैगा इन टाइबल एण्ड कास्टेस आॅफ द सेन्ट्रल इण्डिया में बैंगा जनजाति के बारे में काफी वर्णन किया गया है। इनके अनुसार बैंगा आदिम द्रविड़ समूह की जनजाति है जो मध्य भारत के मण्डला बाला घाट एवं बिलासपुर जिले के सतपुरा पर्वत श्रृंखलाओं में निवास करती है तथा इनके निवास स्थान ऊँचे तथा घने जंगलों में होते है जहाँ पहुंचने के लिए एक मात्र पगदण्डी दिखाई

देती है। इस कारण से यह कभी-कभी दिखाई देते है। जब उन्हें बनिये से या शराब विक्रेता से काम होता है।

डब्लू0एच0 शूबर्ट (1931) ने सुपरिटेडेंट आॅफ सेन्सस आपरेशन सेन्ट्रल प्रोविजन एण्ड बरार में बैगा जनजाति के सम्बन्ध में उल्लेख किया है कि बैगा अब केवल लंगोट न पहनकर कुछ कपड़ों का भी प्रयोग करने लगे है और धीरे-धीरे उनके जीवन शैली में परिवर्तन दिखायी दे रहा है।

बैगा जनजाति का ऐतिहासिक एवं नृवंशविज्ञानी पुनरावलोकन

यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जनजाति के विकास एवं उत्थान के लिए एक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किये जा रहे है। सबसे पहले (सन् 1867 में) बैगा जनजाति पर प्रारंभिक नृवंशविज्ञानी अध्ययन 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही प्रारंभ हो गए थे। विभिन्न ब्रिटिश अधिकारियों और विद्वानों ने उनके जीवन, संस्कृति और स्वभाव पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला है:--

1. प्रारंभिक औपनिवेशिक विवरण (18वीं एवं 19वीं शताब्दी)

- **कैप्टन थॉमसन (1778/1867):** बैगा जनजाति पर सबसे प्रारंभिक लेखों में कैप्टन थॉमसन का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने बैगाओं को 'सर्वाधिक वनवासी' (Most Jungle-dwelling) जनजाति बताया, जो सभ्यता के संपर्क से दूर रहना पसंद करते थे। उनके अनुसार बैगा वनों को काटकर खेती (बेवर) करते थे, ओझा (झाड़-फूंक) का कार्य करते थे और कंदमूल, शहद एवं जड़ी-बूटियों पर निर्भर थे।
- **कर्नल वार्ड (1870):** 'मछली सेटलमेंट रिपोर्ट' के माध्यम से वार्ड ने उल्लेख किया कि यह जनजाति पूर्णतः स्वतंत्र रहना पसंद करती है और वनों की दुर्गम परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करती है।
- **कैप्टन जे. फोरसिथ (1872):** अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'द हाइलैंड्स ऑफ सेंट्रल इंडिया'** में उन्होंने बैगाओं के शारीरिक लक्षणों का वर्णन किया। उन्होंने बताया कि ये दुर्लभ पहाड़ी क्षेत्रों में रहते हैं, कंधे पर कुल्हाड़ी और तीर-कमान रखते हैं और न्यूनतम वस्त्र (लंगोट) धारण करते हैं।

2. प्रमुख नृवंशविज्ञानी अध्ययन (20वीं शताब्दी)–

हर्बर्ट रिज़ले (1891): 'द पीपुल्स ऑफ इंडिया' में रिज़ले ने आदिवासियों के पिछड़ेपन और अज्ञानता के कारण होने वाले शोषण का विश्लेषण किया। उनका कार्य जनजातीय समस्याओं को समझने का एक आधारभूत ग्रंथ है।

- **रसेल और हीरालाल (1916): 'द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ द सेंट्रल प्रोविंसेस ऑफ इंडिया'** में उन्होंने बैगाओं को 'आदिम द्रविड़ समूह' से संबंधित बताया। उन्होंने इनके निवास स्थानों की दुर्गमता का वर्णन करते हुए लिखा कि ये केवल शराब या नमक की आवश्यकता पड़ने पर ही बाहरी लोगों (बनिया आदि) के संपर्क में आते हैं।
- **डब्ल्यू. एच. शूबर्ट (1931):** 'सेंसस ऑपरेशन' के दौरान उन्होंने बैगाओं की जीवनशैली में आ रहे धीमे परिवर्तनों को दर्ज किया और बताया कि वे अब लंगोट के साथ-साथ अन्य वस्त्रों का प्रयोग भी करने लगे हैं।

3. वेरियर एल्विन का ऐतिहासिक योगदान

वेरियर एल्विन (1939): इनकी कालजयी कृति **'द बैगा'** इस जनजाति पर लिखा गया सबसे विस्तृत और प्रामाणिक दस्तावेज है। एल्विन ने बैगा चाक के पाटन और सड़वा छापर गाँवों में करीब 6 वर्षों तक रहकर

उनके एकांत प्रिय जीवन और सांस्कृतिक संकुलों का अध्ययन किया। इस पुस्तक में बैगा जनजाति के जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है इसके अनुसार बैगा जनजाति आदिम जनजाति है और यह जनजाति एकान्त जीवन निर्वाह करना पसन्द करती है।

4. आधुनिक शैक्षणिक योगदान

स्वतंत्रता के पश्चात मध्य भारत और विंध्य क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा बैगा जनजाति पर निरंतर शोध कार्य किए गए हैं। विशेष रूप से **डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल ।** इन संस्थानों द्वारा बैगाओं की समस्याओं, उनके विस्थापन और विकास की संभावनाओं पर अनेक लघु-शोध प्रबंध और परियोजनाएं प्रकाशित की जा चुकी हैं।

ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह स्पष्ट है कि बैगा जनजाति न केवल मध्य भारत की 'आदिम' जनजाति है, बल्कि वह भारतीय वनों की संरक्षक भी रही है। जहाँ प्रारंभिक लेखों ने उन्हें 'पिछड़ा' और 'सभ्यता से डरा हुआ' बताया, वहीं आधुनिक शोधों ने उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता और प्राकृतिक औषधीय ज्ञान को वैश्विक पहचान दिलाई है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि: "जनजाति एक ऐसा विशिष्ट सामाजिक समूह है, जिसका अपना एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, अपनी एक विशिष्ट भाषा, अनूठी संस्कृति और एक सुदृढ़ सामाजिक संगठन होता है।"

उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में साहित्यिक स्रोत

उत्तर प्रदेश की जनजातियों, विशेषकर सोनभद्र और विंध्य क्षेत्र के संदर्भ में **अमीर हसन** का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है:--

- **'ए बंच ऑफ वाइल्ड फ्लावर्स' (A Bunch of Wild Flowers):** इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश की विभिन्न जनजातियों की जीवनशैली के प्राचीन और पारंपरिक प्रारूपों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- **'ट्राइबल एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया' (Tribal Administration in India):** इस ग्रंथ में स्वतंत्रता पूर्व से लेकर वर्तमान समय तक जनजातियों के लिए चलाए जा रहे कल्याणकारी कार्यक्रमों और प्रशासनिक नीतियों की विस्तृत समीक्षा की गई है।

उपर्युक्त साहित्यिक सर्वेक्षण यह स्पष्ट करता है कि जनजाति केवल एक 'जाति' नहीं, बल्कि एक 'पूर्ण समाज' है जिसका अस्तित्व उसकी सांस्कृतिक मौलिकता और भौगोलिक जड़ों से जुड़ा है। सोनभद्र के बैगाओं का अध्ययन करते समय इन वैश्विक और राष्ट्रीय संदर्भों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

यह विंध्य क्षेत्र के आदिवासी सोनभद्र पर किए गए व्यक्तिगत अवलोकन और साक्षात्कार का परिणाम है। अध्ययन क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले की डद्धी तहसील के कुछ गाँव हैं।

विंध्य क्षेत्र की स्थलाकृति

विन्ध्य क्षेत्र में स्थित सोनभद्र विंध्याचल मण्डल का एक जनपद है, जो मण्डल के दक्षिणी परिसर में बसा हुआ है। इस मण्डल में तीन जिले हैं – उत्तर में संत रविदास नगर (भदोही), केन्द्र में मिर्जापुर जनपद तथा दक्षिण में सोनभद्र जनपद अवस्थित है। कुछ वर्ष पूर्व यह जनपद मिर्जापुर का ही भाग रहा है। सन 1989 में उत्तर प्रदेश शासन की घोषणा के अनुसार मिर्जापुर जनपद की दो तहसीलें – राबर्ट्सगंज व दुग्धी – को मिर्जापुर से अलग करके सोनभद्र को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। भौगोलिक दृष्टि से इसका क्षेत्रफल 6819.28 वर्ग किलोमीटर है जो 23.52 और 25.32 उत्तरी अक्षांश तथा 82.72 एवं 83.33 पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। आज की तिथि में यह उत्तर प्रदेश का सबसे दक्षिणी जिला है। इस जनपद के पूर्व में बिहार राज्य के दो जिले – रोहतासगढ़ व पलमऊ बसे हैं। दक्षिण में मध्य प्रदेश का सतना व सीधी का हिस्सा है। दक्षिण-पश्चिम में है रीवा तथा पश्चिम व उत्तर में मिर्जापुर जनपद है। सोनभद्र कोई विशेष स्थान नहीं है, न ही इस नाम से कोई गाँव, कस्बा या नगर है। इन स्थितियों में सोनभद्र नाम जनपद के पूरे भौगोलिक विस्तार एवं परिचय का प्रतीक है।

इस जनपद के लगभग बीच से सोन नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, जो पूर्व में बिहार के रोहतासगढ़ जिले से होते हुए आगे निकल जाती है। इस सोन नदी को एक सांस्कृतिक विरासत व गौरव प्राप्त है। अपनी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक-सामाजिक यात्रा में सोनभद्र विंध्यमण्डल में नहीं, अन्य मण्डलों में भी अपनी अलग पहचान व स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। विश्व सभ्यता के इतिहास में घाटी-सभ्यता को प्राचीनतम माना गया है। क्योंकि इसी से जुड़ी हुई हैं गुफा-मानव की आदिम कहानी। सोननदी मध्य प्रदेश के रीवा जनपद से होती हुई इस जिले में आती है और जितनी दूर तक इस परिक्षेत्र से गुजरती है उसके दोनों ओर कैमूर पर्वत की घाटियां फैली हैं। दूर तक फैला है घना जंगल, जिसे संस्कृत आचार्यों ने 'विंध्यावती' कहा है। नदी के दोनों किनारों की ओर फैले जंगल के बीच पहाड़ की जो कन्दराये या गुफायें स्थित हैं, उनमें कभी आदिम मनुष्य का निवास रहा है। इस मनुष्य ने इन गुफाओं के भीतर केवल ऋतु के झंझावात से ही अपनी रक्षा नहीं की, वह जब भी स्थिर हुआ, पर्वत शिलाओं पर कितने ही चित्र उकेरे। इतिहासकारों ने इन चित्रों को प्रागैतिहासिक काल के चित्र माना।

जनपद की वर्तमान स्थिति का जातिगत विश्लेषण करने पर जो समाजशास्त्र दिखाई देता है, उसमें इस पूरे परिक्षेत्र में एक वे हैं जिनकी 90 प्रतिशत की जनसंख्या का रंग काला है और जो छोटी-छोटी उपजातियों की इकाइयों में बसे हुए हैं। सबकी अपनी-अपनी प्रथायें, परम्परायें, अपने टोटेम हैं। अपने जातिगत विश्वास हैं और उपासना तथा कर्मकाण्ड के अपने तौर तरीके हैं। यह अनुमान किया जा सकता है कि इस पूरे परिक्षेत्र में बसे ये लोग, उसी आदिम मानव की विकास गाथा के आधुनिक अवशेष हैं। दूसरा वर्ग, इन सबसे अलग – थलग – पौराणिक मान्यताओं व संदर्भों से जुड़कर धार्मिक प्रतीकों को साथ लेकर इस परिक्षेत्र में कालान्तर में आकर बस गया है। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इनमें पहली श्रेणी के व्यक्ति ही यहाँ के मूल निवासी हैं जिन्हें यहाँ का आदिवासी कहा जा सकता है।

इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातियों में **गोंड, कोल, चेर, मझवार, खरवार, अगरिया, पथरी, बयान, पनिका, परहिया, मुसहर, कंवर और बैगा** प्रमुख हैं। इन जनजातियों का ऐतिहासिक अध्ययन न केवल इस क्षेत्र के विकास को समझने में सहायक है, बल्कि यह अनेक अनछुए ऐतिहासिक तथ्यों को भी उद्घाटित करता है।

सोनभद्र जनपद की जनजातियों में 'बैगा' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान रखती है। 'बैगा' शब्द का शाब्दिक अर्थ **'पुजारी'** के रूप में भी जाना जाता है।प्रसिद्ध नृवंशविज्ञानी **रसेल** के अनुसार, बैगा एक **आदिकालीन द्रविड़ जाति** है, जिनका मूल निवास स्थान सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला का पूर्वी भाग रहा है। समय

के साथ यह जाति प्रवास करते हुए सोनभद्र तक पहुँची। बैगा जनजाति के लोग शारीरिक रूप से कृष्णवर्ण (काले), मध्यम या नाटे कद (ठिगने) के होते हैं और उनकी नाक प्रायः चपटी होती है।

बैगा और गोंड जनजाति के मध्य एक गहरा सामाजिक और आध्यात्मिक संबंध विद्यमान है:-बैगा समुदाय, गोंड जनजाति के यहाँ पुरोहित का कार्य करता है। इसी कारण गोंड समाज में इन्हें अत्यधिक सम्मान प्राप्त है। लोक मान्यताओं और किंवदंतियों के अनुसार, बैगा और गोंड एक ही पूर्वज के वंशज माने जाते हैं। इन्हें **'भूमिया'** (धरती का पुत्र) जनजाति की ही एक शाखा स्वीकार किया गया है।

पौराणिक मान्यता एवं उपजातियाँ

बैगा समाज की उत्पत्ति के पीछे एक प्रसिद्ध लोककथा प्रचलित है, जिसके अनुसार 'नंगा बैगा' और 'नंगी बैगिन' ने **कजली वन** में निवास किया, और उन्हीं से विभिन्न उपजातियों का विकास हुआ।**आर. एल. रसेल और हीरालाल** के अनुसार बैगाओं की सात प्रमुख उपजातियाँ हैं, जो उनके क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विस्तार को दर्शाती हैं:-**विझंवार नरोतिया भरोतिया नाहर रायभैना (कथभैना) कोंडा गोंडवेना** इसके अतिरिक्त मरूतिया, पंडवान और पुंडी जैसी उपशाखाएं भी इस क्षेत्र में पाई जाती हैं।

व्यक्तिगत अवलोकन और साक्षात्कारों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बैगा समुदाय में सामाजिक-आर्थिक विकास की कोई तीव्र प्रतिस्पर्धा नहीं है। वे अपनी पारंपरिक जीवनशैली और परिवार में ही संतोष का अनुभव करते हैं। उनकी बाहरी समाज के प्रति उदासीनता और अपने इतिहास के प्रति मौन रहने की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि वे अपनी विशिष्टता को बाहरी हस्तक्षेप से बचाकर रखना चाहते हैं। इसी कारण वे आज भी अत्यंत पिछड़ेपन, गरीबी और अभावों का सामना कर रहे हैं। इस समुदाय में सदियों बाद भी विकासात्मक परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। ये जनजातियाँ अपने परिवार, समाज में ही खुश या सुखी-सम्पन्न है। ऐसा लगता है कि ये दूसरे समुदाय या समाज के लोगों से मिलना ही नहीं चाहते हैं, और कोई इनके बारे में अध्ययन करना चाहता है, तो ये अपने इतिहास के बारे में जानते ही नहीं हैं या अपने बारे में कुछ बताना ही नहीं चाहते हैं। वर्तमान में जनजाति अत्यंत पिछड़ी, गरीब, अभावग्रस्त और मुख्यधारा से विमुख है।

उ0प्र0 के सोनभद्र जिले की दुद्धी तहसील के गांवों को चुना गया है।

नेमना गाँव सोनभद्र जिले की दुद्धी तहसील और म्योरपुर दलाक मंे है नेमना गांव की कुल जनसंख्या 4511 है और यहाँ 828 घर है जनजातियों की संख्या 531 है। पुरूषों की जनसंख्या 2329 और महिलाओं की 2182 है यहां ग्राम पंचायत है।

बैगा जनजाति केवल उ0प्र0 सोनभद्र जिले की पायी जाती है। जिसकी जनसंख्या 30006 है। दुद्धी तहसील क्षेत्र का बैरखड़ गांव के बैगा आदिवासियों में ढोलक की थाप पर होली खेलने की परम्परा आज भी कायम है। गांव में पांच दिन पहले होली मनाने की परम्परा है।

बैरखड़ गांव जनजाति बाहुल्य गांव है। दुद्धी के बैरखड़ गांव के अलावा, सोनभद्र के म्योरपुर ब्लाक के कुदरी, देवहार और अजनगीरा में भी यही परम्परा है।बैरखड़ गांव सोनभद्र जिले की दुद्धी तहसील में स्थित है। बैरखड़ गांव की कुल जनसंख्या 1971 है। पुरूष 1044 और महिलायें 927 है। यहाँ 350 घर है।

कुदरी गाँव भी दुद्धी तहसील में स्थित है कुल जनसंख्या 2531 है। जिनमें 1238 पुरूष और 1293 महिलाये है। इस गाँव में 461 घर है।

अजनगीरा गाँव दुद्धी तहसील में स्थित है अजनगीरा की कुल जनसंख्या 478 है जिसमें 257 पुरूष और 221 महिलायें है। अजनगीरा में लगभग 80 घर है।

चयनित परिवारों में से दैव निदर्शन विधि द्वारा 30 परिवारों का चयन करके साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से 50 प्रतिशत प्रश्न जो शिक्षा स्वास्थ्य, रोजगार और एन0जी0ओ0 से सम्बन्धित थे, गणात्मक रूप से तथ्यों का विश्लेषण किया गया। इसके अलावा बैगा परिवारों के मुखियों से तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया साथ व्यक्तिगत अवलोकन पद्धति का प्रयोग करके भी प्राथमिक तथ्यों को संकलित किया गया जिससे निम्न निष्कर्ष निकलते है। तत्पश्चात् निम्न आँकड़े उपलब्ध हुए, जो उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित करते हैं---

तालिका: बैगा जनजाति की प्रमुख उपजातियाँ एवं उनका वर्गीकरण

क्र.सं.	**उपजाति का नाम**	**प्रमुख विशेषताएँ एवं विवरण**
1	**विंझवार (Binjhwar)**	यह बैगाओं की सबसे सभ्य और संपन्न उपजाति मानी जाती है। ये लोग मैदानी क्षेत्रों में रहते हैं और स्थायी कृषि अपना चुके हैं।
2	**नरोटिया (Narotia)**	ये पारंपरिक बैगा समूह का हिस्सा हैं जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से गहराई से जुड़े हैं।
3	**भरोतिया (Bharotia)**	नरोटिया और भरोतिया अक्सर साथ पाए जाते हैं। ये मंडला और सोनभद्र के क्षेत्रों में विस्तृत हैं।
4	**नाहर (Nahar)**	ये उपजाति मुख्य रूप से वनों के गहरे क्षेत्रों में निवास करती है और बाँस शिल्प में कुशल मानी जाती है।
5	**रायभैना / कथभैना**	इनका नाम उनके विशिष्ट क्षेत्रीय निवास या उनके द्वारा किए जाने वाले किसी विशेष कार्य (जैसे कथा कहना) से पड़ा है।
6	**कोंडा (Konda)**	यह एक छोटी उपजाति है जो भौगोलिक रूप से अन्य समूहों से थोड़ी पृथक रहती है।
7	**गोंडवेना (Gondwena)**	ये वे बैगा हैं जिनका गोंड जनजाति के साथ बहुत गहरा सामाजिक और वैवाहिक संपर्क रहा है।
8	**मरूतिया (Marutiya)**	सोनभद्र और विंध्य क्षेत्र में पाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण उप-शाखा।
9	**पंडवान (Pandwan)**	बैगाओं की वह श्रेणी जो पौराणिक कथाओं और पंडा (पुजारी) के कार्यों में अधिक संलग्न रहती है।

अध्ययन क्षेत्र का जनसांख्यिकीय विवरण एवं प्रतिचयन (Sampling)

चयनित ग्रामों का परिचय एवं जनसांख्यिकी

प्रस्तुत शोध हेतु उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद की **दुद्धी तहसील** के उन गाँवों का चयन किया गया है जहाँ बैगा जनजाति की सघनता अधिक है। इन गाँवों का जनसांख्यिकीय विवरण निम्नलिखित है:-

1. **नेमना (Nemna):** यह म्योरपुर ब्लॉक के अंतर्गत आता है। यहाँ की कुल जनसंख्या **4511** है, जिसमें 2329 पुरुष और 2182 महिलाएँ हैं। जनजातीय परिवारों की संख्या 531 है।
2. **बैरखड़ (Bairkhad):** यह एक प्रमुख जनजातीय बाहुल्य गाँव है जिसकी कुल जनसंख्या **1971** है। यहाँ होली का पर्व निर्धारित तिथि से 5 दिन पूर्व ढोलक की थाप पर मनाने की अनूठी परंपरा आज भी जीवित है।
3. **कुदरी (Kudri):** यहाँ की कुल जनसंख्या **2531** है, जिसमें महिलाओं की संख्या (1293) पुरुषों (1238) से अधिक है, जो एक महत्वपूर्ण सामाजिक तथ्य है।
4. **अजनीगुरा (Ajanigura):** यह एक छोटा बसावट वाला गाँव है जिसमें लगभग 80 घर हैं और कुल जनसंख्या **478** है।
5. **दीघुल (Dighul):** यह एक बड़ी ग्राम पंचायत है जिसमें 639 परिवार निवास करते हैं। यहाँ की कुल जनसंख्या **3591** है।
6. **गरदरवा (Gardarwa):** यहाँ कुल 204 परिवार निवास करते हैं और जनसंख्या **969** है।

प्रतिचयन प्रविधि (Sampling Methodology)

सोनभद्र जनपद में बैगा जनजाति की कुल जनसंख्या लगभग **30,006** है। शोध को वैज्ञानिक आधार देने हेतु **'अनुपातिक दैव निदर्शन विधि' (Proportional Random Sampling Method)** का प्रयोग किया गया है:

- **प्रथम चरण:** दुद्धी तहसील के उन 6 गाँवों का चयन किया गया जहाँ बैगा परिवारों का बाहुल्य है।
- **द्वितीय चरण:** प्रत्येक गाँव के कुल बैगा परिवारों में से **30 प्रतिशत** परिवारों का चयन गहन अध्ययन हेतु किया गया।

तालिका: चयनित ग्रामों में बैगा परिवारों का विवरण एवं निदर्शन (Sampling)

क्र.सं.	**चयनित गाँव**	**बैगा परिवारों की कुल संख्या**	**चयनित 30% परिवारों की संख्या**
1	नेमना	195	60
2	बैरखड़	440	132
3	कुदरी	151	45
4	अजनीगुरा	79	27
5	दीघुल	450	135
6	गरदरवा	112	36
योग		**1427**	**435**

डेटा संग्रहण एवं विश्लेषण (Data Collection & Analysis)

चयनित परिवारों से प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित प्रविधियों का समन्वय किया गया:

1. **साक्षात्कार अनुसूची (Interview Schedule):** परिवार के मुखियाओं से प्रत्यक्ष संवाद कर डेटा प्राप्त किया गया।

2. **केंद्रित प्रश्नावली:** शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और एनजीओ (NGO) की भूमिका से संबंधित 50% विशिष्ट प्रश्नों के माध्यम से गणनात्मक विश्लेषण किया गया।
3. **व्यक्तिगत अवलोकन:** स्वयं क्षेत्र में उपस्थित रहकर जनजातीय जीवनशैली के सूक्ष्म तथ्यों का अवलोकन किया गया।

उपर्युक्त आंकड़ों और प्राथमिक तथ्यों के संकलन से यह स्पष्ट होता है कि बैगा जनजाति अपनी सांस्कृतिक पहचान को बचाए हुए है, किंतु शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे आधुनिक मानकों पर आज भी यह समुदाय मुख्यधारा से पीछे है।

परिचर्चा-

इस शोध पत्र में बैगा सोनभद्र जनपद की जनजाति के सामाजिक-आर्थिक जीवन का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जनजाति की अपनी सामाजिक व्यवस्था है जिसमें परम्परा और अन्धविश्वास की सशक्त पकड़ है। जनजाति की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है। सरकार द्वारा दी गयी सुविधाओं का भी वे पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं। इनमें राजनैतिक चेतना भी न्यून है। नई पीढ़ी में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। इस प्रकार राष्ट्र की मुख्य धारा में सोनभद्र की इस जनजाति को लाने में अभी और अधिक प्रयास की आवश्यकता है तथा इसमें अधिक समय लग सकता है।

बैगा जनजाति का सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन

बैगा जनजाति मध्यप्रदेश की जनजातियों में एक विशेष स्थान रखती है। इस जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रदेश शासन ने इसे विशेष पिछड़ी जनजाति (Special Backward Tribe) के समूह में शामिल किया है, जिससे इस समुदाय को सरकारी संरक्षण व योजनाओं का लाभ प्राप्त होता है। बैगा जनजाति जितनी प्राचीन है, उतनी ही प्राचीन इसकी संस्कृति और रीति-रिवाज़ भी हैं। बैगा समुदाय अपनी संस्कृति को सहेजे हुए है।

आधुनिकता के दौर में बैगा जनजाति की संस्कृति में भी आधुनिकता का समावेश हो रहा है। अब सघन बन् कदराओं तथा शिकार को छोड़ कर मैदानी क्षेत्रों में रहना तथा कृषि कार्य करमा प्रारंभ कर रह है। किन्तु बैगा अपने आप को जगल का राजा और प्रथम मानव मानते हैं। इनका मानना है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा जी के द्वारा हुई बैगा अपने आप को आदिम पुरुष कहते है. उनका मानना है की वही पृथ्वी का प्रथम मानव है। बैगाओं क ही जन्म सर्वप्रथम हुआ है ये ही पृथ्वी में मानव जाति को लाने वाले है उनका सम्बन्ध प्रथम मानव से है। आज भी बैगा लोगों में अपनी प्रकृति-आधारित जीवनशैली और सांस्कृतिक विश्वासों का सम्मान किया जाता है। वे अपने आप को वन का पुत्र और प्रकृति से जुड़ा समुदाय मानते हैं और अपने उत्पत्ति-संबंधी लोककथाओं तथा रीति-रिवाज़ों को पीढ़ियों तक संजोए रखते हैं।

वैज्ञानिक और भाषाई दृष्टि से बैगा जनजाति को *द्राविडीयन (Dravidian)* समूह की जाति नहीं माना **जाता।**बैगा लोगों की मूल भाषा के बारे में कहा जाता है कि उनके पूर्वज कभी ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा बोलते थे, लेकिन आज वह भाषा कहीं नज़र नहीं आती और अधिकांश बैगा लोग हिंदी, छत्तीसगढ़ी और कुछ स्थानीय भाषाएँ बोलते हैं। बैगा जनजाति एक आदिम जनजाति है और भारत की सबसे प्राचीन जनजातियों में से एक मानी जाती है। बैगा भारतीय राज्यों मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में निवास करते हैं।

आज के समय में बैगा जनजाति अपनी परंपरागत रीति-रिवाज और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए हुए है। वे अब सघन वनों और शिकार जीवन से हटकर मैदानी क्षेत्रों में रहना, खेती करना और आधुनिक जीवनशैली अपनाना भी शुरू कर रहे हैं, फिर भी वे अपने आप को **जंगल से जुड़ा हुआ और अपनी संस्कृति** का सम्मान करने वाला समुदाय मानते हैं। बैगा जनजाति की संस्कृति, लोक विश्वास, प्राकृतिक पूजा और पारंपरिक जीवनशैली उन्हें अन्य आदिवासी समुदायों से अलग पहचान देती है।

अधिवास एवं भौतिक संस्कृति

बैगा सामान्यतः सघन वनों के बीच चौरस भूमि पर अपने छोटे गाँव बसाते हैं। ब्रिटिश काल में बसाए गए इनके गाँवों को **'फारेस्ट विलेज'** कहा जाता है। बैगा लोग सघन वन प्रान्तर में रहने के आदी हैं। उनके गांव छोटे होते हैं। कुछ बड़े गांव भी पाए जाते हैं जिनमें जनसंख्या 1000 या इससे अधिक होती है। ऐसे गांव अंग्रेजों के जमाने में बसाए गए थे। यह "फारेस्ट विलेज" (वन्य ग्राम) हैं। इनके बसाए जाने के पीछे उद्देश्य यह था कि अंग्रेज सरकार को जंगल कटवाने के काम के लिए लगभग मुफ्त की मजदूरी में श्रमिक मिल जाएं।

आवास संरचना: बैगाओं के मकान 8-13 फुट चौड़े और 20-30 फुट लंबे होते हैं। दीवारें बाँस की होती हैं जिन पर मिट्टी का लेप होता है। दरवाज़े इतने छोटे होते हैं कि झुककर प्रवेश करना पड़ता है। दरवाजा होता है पर खिड़की नहीं। खपरैल की जगह घास-फूस इस्तेमाल होता है। गांव के सभी मकान एक दूसरे से सटाकर बनाए जाते हैं। मकानों में रसोई घर काफी बड़ा होता है जो कि शयनकक्ष का भी काम देता है। बैगाओं के गांव सघन वनों के बीच में चौरस जमीन खोजकर बसा लिए जाते हैं, गांव की सीमा को अत्यंत साफ रखा जाता है। गांव की सीमा के बाहर मरघट और उसके समीप टोने-टोटकों का स्थान भी पाया जाता है। प्रतयेक गांव में बाहर से आने वाले लोगों को ठहराने के लिए एक पट्टी अलग बना दी जाती है।

बैगाओं की बस्तियां दिन के उजाले में भी सायं-सायं करती रहती हैं। क्योंकि वयस्क बैगा जंगल जा चुके होते हैं। केवल छोटे बच्चे घर के बाहर खेलते रहते हैं, शेर, तेन्दुए आदि का इनको कोई भय नहीं होता। मंडला जिले में कहा जाता है कि बैगा मात्र ललकार से शेर की डाढ़ "बांध" सकते हैं इसलिए शेर बैगाओं को कभी नहीं छोड़ता और डाढ़ बांध रहने की हालत में शेर भूखा मर जाता है। इस मान्यता में सत्य की मात्रा बहुत कम है।

शिकार एवं वन-संबंध

बैगा जनजाति स्वयं को 'जंगल का राजा' मानती है। ये धनुष बाण के द्वारा जंगली पशु-पक्षियों का शिकार के लिए गांव के सारे जवान पुरूष एक ही साथ निकल जाते हैं। जंगल में जाकर वे अलग-अलग टोलियों में बंटकर जानवरों का हांका लगाते हैं। हांका लगाते समय वे झाड़ियों में छिप जाते हैं। कई बार वे अपने शरीर से झाड़िया बांध लेते हैं, ताकि शिकार को भ्रम हो जाए। बैगा निशाना साधने में अत्यंत कुशल होते हैं। उनके अचूक निशाने से छोड़ा गया तीर जानवरों को या तुरन्त मार डालता है या घायल कर देता है। घायल पशु का वे सावधानी से पीछा करते रहते हैं। बैगा लोग विष बुझे तीरों, फंदों आदि का भी प्रयोग करते हैं। पक्षियों को पकड़ने के लिए अगर और बड़ के दूध का लेप उन डालियों टहनियों एवं पत्तों पर कर दिया जाता है जहां पक्षी आदतन बैठा करते हैं उस पक्षी को आसानी से मार गिराते हैं। ये एक विचित्र फंदा जिसे "मलंदा" कहते हैं, तैयार करते हैं। इसमें वृक्ष की टहनी को उपयोग में लाया जाता है। इस फंदे में सांभर और कभी-कभी वनराज तक फंस जाता है। यह इतना मजबूत होता है कि एक बार फंस जाने पर शक्तिशाली जानवर भी छूटकर नहीं जा पाते हैं। कभी-कभी बेचारे शिकारी का भी शिकार हो जाता है।

बैगा शेर को अपना छोटा भाई समझते हैं। कहा जाता है कि जब उसकी मंत्रों से डाढ़ नहीं बंधती तो वह आदमखोर हो जाता है। आदमखोर के द्वारा मारे जाने पर बैगा ओझा मृत्यु स्थल पर जाकर रक्त मिट्टी को सानकर एक शंकु बनाता है। और फिर शेर की नकल करता हुआ चलता है और आगे बढ़कर शंकु को अपने दांतों से काटता है। तब चारों ओर खेड़े हुए लोग उसे (छद्मवेषी शेर को) लाठियों से झूठ-मूठ मारते हैं और छद्म शेर छद्म मृत्यु का वरण कर लेता है। उसके बाद सुअर की बलि चढ़ाई जाती है।

भोजन एवं खान-पान

बैगा मांस, मोटे अनाज एवं कंदमूल फलों का भोजन करते हैं। अधिक उन्नत बैगा गोमांस नहीं खाते। उत्सवों के समय सुअर की बलि देने की प्रथा अभी भी विद्यमान है। पहले एक बर्तन में गरम पानी भर लिया जाता है, फिर उसमें एक सुअर डाल दिया जाता है। जब तक वह चीखता-चिल्लाता रहता है, स्त्रियां गीत गाती रहती है अंत में कुल्हाड़ी से उसका काम तमाम कर दिया जाता है। जंगल के पशुओं का मांस शिकार द्वारा प्राप्त करते हैं, किन्तु उनमें चूहों के मांस के प्रति विशेष रूचि पाई जाती है। चूहों को भूनकर खाया जाता है। सर्प और मेढ़कों का भी वे भोजन करते हैं।

जंगली जानवरों का आखेट और मछली मारना बैगा युवकों का प्रिय मनोरंजन है। बैगा लोगों का पहला भोजन "बासी" से स्पष्ट है बचा हुआ भोजन। "पेज" होता है कोदो और मक्के का घेल जिसमें स्वाद के लिए नमक डाल दिया जाता है। भात-भाजी का भोजन बियारी कहलाता है।

अनाजों में ज्वार, बाजरा, मक्का, राई और शमतिला इनकी कृषि कृत उपजें एवं भोजन का महत्वपूर्ण भाग हैं। मक्का, चावल, कुटकी या ज्वार से वे पेज भी बनाते हैं, जो काफी पतली होती है। मेहमान नवाजी में पेज सबसे पहले दी जाती है, तेदू या आम के पत्तों की चुंगी बनाकर उसमें तम्बाकू भरकर धूम्रपान किया जाता है। बैगा लोगों को जंगली बूटियों की पहचान होती है ओर उनको पाने के लिए वे बड़ी कठिनाई पार करने को तैयार रहते हैं।

इस तरह बैगा जन जाति का पारंपरिक भोजन मुख्य रूप से स्थानीय और मौसमी उपलब्ध संसाध्नों पर आधारित है। वे अन्न और अनाज जैसे चावल ज्वार बाजरा और मक्क़ा का सेवन करते हैं। इसके साथ ही कन्द-मूल जैसे शकरकद्दू अरबी और उत्तड़ तथा जंगली फल और वनस्पतियाँ भी उनके आहार का अभन्न हिस्सा हैं। मांस का सेवन सीमति मात्रा में और विशेष अवसरों पर किया जाता है क्योंकि वे मुख्यतः शाकाहारी प्रवति के होते हैं। इसके अतिरिक्त मछली और जलीय जीव कभी-कभी उनके आहार का हिस्सा बनते हैं। बैगा लोग प्राकतिक संसाध्नों के अनुसार अपने भोजन का चयन करते हैं और उनका आहार सादा पौष्टिक तथा पर्यावरण के अनुकूल होता है। इस प्रकार बैगा लोगों का भोजन उनके जीवन और सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।

प्रमुख आहार: इनका भोजन मोटे अनाज (कोदो, कुटकी मक्का) कंदमूल और मांस पर आधारित है।**बासी:** सुबह का बचा हुआ भोजन।**पेज:** कोदो या मक्के का पतला घोल (स्वाद हेतु नमक डालकर)।**बियारी:** रात का भात-भाजी का भोजन।**व्यसन:** ये तंबाकू (आम या तेंदू के पत्तों की चुंगी बनाकर) और महुआ की शराब का सेवन करते हैं।

आभूषण

बैगा पुरुष पारंपरिक रूप से हाथ में कड़ (बेल्ट-नुमा) जैसे आभूषण पहनते हैं और कुछ अवसरों पर गर्दन में हार या माला भी पहनते हैं। महिलाएँ पारंपरिक अवसरों पर विशेष आभूषण पहनती हैं, जैसे **ग्लास की**

माला, सिक्कों की माला या रंगीन मोतियों से बनी गर्दन की सजावट। बैगा महिलाएँ सिर पर फंदरी जैसे सजावटी तत्व या प्राकृतिक सामग्री से बने गहने भी लगाती हैं, खासकर नृत्य और त्यौहार के समय। बैगा समाज में शरीर पर **टैटू (गोदना)** भी एक प्रमुख सजावट की तरह माना जाता है और यह पारंपरिक आभूषण की तरह देखा जाता है। बैगा महिलाएँ अक्सर **नाक में पारंपरिक गोल या लॉन्ग गहने** पहनती हैं और गर्दन, बाजू और कलाई पर आभूषण की विभिन्न शैलियाँ होती हैं, इनमें रंगीन मोती, सिक्कों की माला तथा लोहे या चांदी की कड़े शामिल हैं।

गोदना (Tattoo) – बैगा संस्कृति का महत्वपूर्ण प्रतीक

गोदना बैगा जनजाति की सबसे विशिष्ट सांस्कृतिक और पारंपरिक कला है, जो केवल सजावट नहीं बल्कि पहचान, पहचान-चिन्ह और आत्म-अभिव्यक्ति का एक गहरा रूप है। बैगा जनजाति में गोदना का अत्यधिक महत्व है। इस परंपरा में शरीर के विभिन्न हिस्सों पर सांस्कृतिक डिज़ाइनों को टैटू के रूप में गुदवाया जाता है, जो उनकी पहचान, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक मान्यताओं का प्रतीक है।; महिलाएँ शरीर के विभिन्न अंगों पर इसे आभूषण की तरह धारण करती हैं।

गोदना की परंपरा और अर्थ-- गोदना बैगा समाज में शरीर पर बनाई जाने वाली **पारंपरिक टैटूिंग** होती है, जिसे पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा अपनाया जाता है, लेकिन यह विशेष रूप से महिलाओं में ज्यादा प्रचलित है। बैगा लोग मानते हैं कि टैटू ही वे “आभूषण” हैं जो मृत्यु के बाद भी शरीर के साथ जाते हैं, इसलिए यह स्थायी पहचान का प्रतीक है।
गोदना को पारंपरिक रूप से पूजा-अनुष्ठानों, जीवन-चरणों और सामाजिक पहचानों के साथ जोड़ा जाता है – जैसे बाल्यावस्था, विवाह, माँ बनने आदि जीवन की महत्वपूर्ण अवस्थाओं के दौरान टैटू बनवाना।

डिजाइन और प्रतीकात्मकता-- गोदना के डिज़ाइन प्राकृतिक, ज्यामितीय और सांस्कृतिक प्रतीकों पर आधारित होते हैं। ये प्रतीक शक्ति, सुरक्षा, समृद्धि, प्रकृति-संयोजन और वीरता का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- पारंपरिक रूप से यह रामतिल (काजल) से बनी स्याही और हथेलियों या सुइयों से गुदवाया जाता है, और इसके लिए विशेष कलाकार (Badnin / Ojha) की सेवाएँ ली जाती हैं।

सामाजिक और जीवन-चरण संकेत-- बैगा समाज में लड़की को लगभग 8-10 वर्ष की आयु में पहली गोदना दी जाती है, और जैसे-जैसे वह बड़ी होती है, उसके शरीर पर और अधिक टैटू बनाए जाते हैं।
- गोदना के निशाँ समुदाय में सम्मान और पहचान का संकेत होते हैं। किसी पूर्ण-गोदना-नारी को पारंपरिक रूप से अधिक प्रतिष्ठा और सम्मान मिलता है।

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विश्वास-- बैगा लोग यह मानते हैं कि गोदना शरीर के लिए रक्षा और आध्यात्मिक सुरक्षा प्रदान करता है तथा व्यक्ति के जीवन में बुरी आत्माओं और रोगों से बचाव करता है।
- यह परंपरा सदियों से चली आ रही है, लेकिन आज युवा पीढ़ी में गोदना की परंपरा कुछ हद तक कम होती जा रही है क्योंकि कई लोग आधुनिक जीवनशैली और दर्द से बचने की चाह रखते हैं।

संक्षेप में गोदना बैगा समाज की प्राचीन, गहरी और पहचान-भरी सांस्कृतिक कला है – यह सिर्फ सजावट नहीं बल्कि आध्यात्मिक अर्थ, सामाजिक पहचान और जीवन-चरणों के प्रतीक से जुड़ी परंपरा है।

बैगा जनजाति के प्रमुख नृत्य

बैगा जनजाति की लोकपरंपरा में अनेक नृत्य रूप पाए जाते हैं, जो छुट्टियों, त्यौहारों, विवाह और सामाजिक उत्सवों पर प्रस्तुत किए जाते हैं। है।बैगा जनजाति के प्रमुख नृत्यों में बैगनी कर्मा, दशहरा या बिलमा तथा परधौनी नृत्य हैं। इसके अलावा विभिन्न अवसरों पर छोड़का पैठाई, बैगा झरपट तथा रीना और फाग नृत्य भी किए जाते हैं। नृत्यों की विविधता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति जितने नृत्य करती है और उनमें जैसी विविधता पाई जाती है, वैसी संभावना अन्य किसी जनजाति में कठिनाई से ही मिलती है। इनमें से कुछ मुख्य नृत्य इस प्रकार हैं:

1. **करमा नृत्य** - यह बैगा का सबसे प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जिसे विशेष रूप से विजयादशमी (दशहरा) से लेकर माघ माह तक किया जाता है। इसमें पुरुष और महिला दोनों समूहों के साथ गायन तथा ढोल-माँदर जैसे वाद्यों के संग परंपरागत गीत और रिदम के साथ नृत्य शामिल होता है। करमा नृत्य समुदाय के बीच सामंजस्य, सुख-दुःख के आदान-प्रदान और युवक-युवतियों के मेल-जोल का माध्यम भी होता है।
2. **परधानी (पर्दहोनी) नृत्य** - यह विवाहों और स्वागत आयोजनों में किया जाता है। इसमें नर्तक लोग लकड़ी, कपड़े और चटाइयों से हाथी जैसे ढांचे बनाकर उस पर सवार होकर नृत्य प्रस्तुत करते हैं।
3. **बिलमा नृत्य** - यह नृत्य भी बैगा समाज में लोकप्रिय है, विशेषकर वर्षा और फसल कटाई के समय तथा उत्सवों पर किया जाता है। इसमें युवा पुरुष-महिला समूह एक दूसरे के गांव में जाकर नृत्य करते हैं और उत्सव में भाग लेते हैं।
4. **रीना-सैला नृत्य** - रीना और सैला जैसे नृत्य त्यौहारों, मौसमी अवसरों और पारिवारिक खुशियों पर प्रस्तुति के लिए किए जाते हैं। रीना गीत मुख्यतः महिलाओं के द्वारा गायन और नृत्य के रूप में किया जाता है, जबकि सैला नृत्य में पुरुष और महिला दोनों भाग लेते हैं।
5. **फाग नृत्य** - होली जैसे त्यौहारों के समय भी बैगा समुदाय में नृत्य किया जाता है, जिसे फाग नृत्य कहा जाता है। इसमें समूह के सदस्य पारंपरिक वाद्यों के साथ रंग-रंग कर उत्सव मनाते हैं।

इस प्रकार बैगा जनजाति जितने प्रकार के नृत्य करती है और उनमें जितनी विविधता है, वैसी शायद ही किसी अन्य जनजाति में इतनी बहुतायत से मिलती है। उनके लोकनृत्यों में परंपरा, संस्कृति, सामुदायिक भावना और प्राकृतिक जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध देखने को मिलता

संस्कार

बैगा जनजाति अपने सामाजिक और धार्मिक जीवन में **परंपरागत संस्कारों** का विशेष महत्व देती है। ये संस्कार जन्म, शिक्षा, विवाह, मृत्यु और अन्य सामाजिक कर्तव्यों से जुड़े होते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे हैं।

बैगा जनजाति के जीवन में विभिन्न अवसर आते है जिनमें वो कुछ विशेष कार्य करते है इन्ही विशेष अवसरो पर किये गये कार्यों को संस्कार कहा जाता है। जैसे जन्म संस्कार छठी नामकरण गोदना विवाह मृत्यु संस्कार आदि । बैगा जनजाति में विवाह 6 प्रकार के होते हैं चढ़ विवाह उठवा विवाह चोर विवाह पैठुठल विवाह लमसेना विवाह और उठरिया विवाह।

जन्म संस्कार एवं नामकरण पद्धति

- **शुद्धिकरण:** शिशु के जन्म के पश्चात प्रसूता को एक माह तक 'अशुद्ध' माना जाता है। माह की समाप्ति पर सामूहिक भोज और विशिष्ट अनुष्ठानों के माध्यम से शुद्धिकरण किया जाता है।
- **नामकरण:** बैगा जनजाति में नाम रखने की एक अनूठी परंपरा है, जहाँ बच्चों के नाम **जन्म के महीने** के आधार पर रखे जाते हैं। जैसे– चैत में जन्मे का नाम 'चैत्री', फागुन में 'फागुनी' और सावन में 'सावनी' आदि। शारीरिक विशिष्टता के आधार पर 'लंगड़ा' जैसे नाम भी प्रचलित हैं।
- बच्चे के जन्म पर विशेष अनुष्ठान किए जाते हैं।

- माता-पिता और परिवार के बुजुर्ग बच्चों के स्वास्थ्य और भविष्य के लिए विशेष पूजा करते हैं।
- बच्चे का नामकरण भी एक धार्मिक समारोह के साथ किया जाता है।

बाल्य शिक्षा और प्रशिक्षण-- छोटे बच्चों को जंगल और समाज के नियम सिखाए जाते हैं।

- बच्चों को सामाजिक जिम्मेदारियों और पारंपरिक कौशल जैसे शिकार, खेती और औषधियों का ज्ञान दिया जाता है।

विवाह संस्कार--

बैगा जनजाति में विवाह सरल और परंपरागत रीति-रिवाजों के अनुसार संपन्न होता है।विवाह में परिवार और समुदाय के बुजुर्गों की सहमति अनिवार्य होती है। विवाह के समय संगीत, नृत्य और पारंपरिक भोजन का आयोजन किया जाता है। बैगा समाज की संरचना कड़े कुल नियमों पर आधारित है। व्यक्तिगत साक्षात्कारों और समाजशास्त्रीय अध्ययन से प्राप्त तथ्य इनके सामाजिक ताने-बाने को स्पष्ट करते हैं:

- **विवाह नियम:** बैगा जाति में 'सगोत्र' (अपने ही कुल में) विवाह पूर्णतः वर्जित है, किंतु **'मात्रकुल'** (ममेरे भाई-बहन) में विवाह संबंध सामान्य और स्वीकार्य माने जाते हैं।
- **वाग्दान:** कई मामलों में विवाह का निर्णय बच्चों के जन्म के समय ही कर दिया जाता है, जिसे समाज की विशिष्ट पहचान के रूप में देखा जाता है।

मृत्यु संस्कार बैगा लोग किसी व्यक्ति की मृत्यु पर उसका **संस्कार** करते हैं। यह उनका सामाजिक और धार्मिक कर्तव्य होता है। इस प्रक्रिया में परिवार और समुदाय मिलकर मृतक के अंतिम संस्कार की सभी आवश्यक तैयारियाँ करते हैं।बुजुर्ग और योग्य व्यक्तियों के मार्गदर्शन में मृतक के शरीर को धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार तैयार किया जाता है। शव को उठाकर अंतिम संस्कार स्थल तक ले जाना जिम्मेदार पुरुषों का कार्य होता है।इस समय महिलाएँ और छोटे बच्चे आमतौर पर अंतिम संस्कार स्थल पर नहीं जाते। शव के आसपास की जगह को साफ रखा जाता है और शव को उचित दिशा में रखकर दाह संस्कार किया जाता है। इस दिन किसी भी अन्य काम या व्यापार में संलग्न नहीं होते।

मृत्यु संस्कार के दौरान परिवार और समाज का ध्यान पूरी तरह से मृतक की आत्मा की शांति और परिवार के कल्याण पर केंद्रित रहता है। बैगा समाज में यह मान्यता है कि यदि मृतक के संस्कार सही ढंग से नहीं किए गए, तो उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती और परिवार पर दुर्भाग्य आ सकता है। इसलिए ये संस्कार परंपरागत विधि और सम्मान के साथ संपन्न किए जाते हैं।बैगा संस्कार में **लालडंकी** और **फोकग**

जैसे अनुष्ठान शामिल हैं। इन संस्कारों के माध्यम से समाज में अनुशासन, धर्म और सांस्कृतिक विरासत बनी रहती है।

सामाजिक नियंत्रण और नियम
अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बैगा जनजाति में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अंतर्गत संयुक्त परिवार की परंपरा है। प्रमुख संरचनात्मक इकाई परिवार है। बैगा जनजाति को "विशेष पिछड़ी जनजातीय समूह" में रखा गया है। यह जनजाति काफ़ी पिछड़ी अवस्था में है। इनका जीवन-रहन-सहन, खान-पान, बोल-चाल आधुनिक मनुष्य से बिल्कुल अलग है। बैगा समाज पुरुष-प्रधान समाज है, लेकिन स्त्रियों को भी अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता प्राप्त है। इनकी राजनीतिक व्यवस्था पंचायत आधारित होती है। पंचों द्वारा दिया गया निर्णय ही सर्वमान्य होता है।

नस्लीय या पारिवारिक संघर्ष की स्थिति में बुजुर्ग व्यक्ति **न्याय** प्रदान करता है। यदि किसी व्यक्ति ने नियम का उल्लंघन किया है तो उसे उसके कर्तव्यों और समाज के सामने **सजा** दी जाती है। जैसे कि किसी अन्य व्यक्ति के खेत में बिना अनुमति के प्रवेश करना, चोरी करना या किसी की संपत्ति को नुकसान पहुँचाना। इस प्रकार, समाज में अनुशासन बनाए रखा जाता है और हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहता है।

धार्मिक विश्वास एवं देवकुल

बैगाओं का धार्मिक जीवन प्रकृति और हिंदू मान्यताओं का एक अद्भुत सम्मिश्रण है:

- **प्रमुख देवता:** इनके सर्वोच्च आराध्य **'बुढ़ा देव' (बुरा देव)** हैं। जनश्रुति के अनुसार बुढ़ा देव का निवास **'साल' (सखुआ) के वृक्ष** में होता है।
- **अनुष्ठान:** ज्येष्ठ (जेठ) माह में बुढ़ा देव की विशेष पूजा की जाती है, जिसमें बकरी की बलि और महुआ की शराब चढ़ाने का विधान है।
- **अन्य देव:** समाज में ठाकुर देव (ग्राम देवता), दुलहा देव, धरती माता और नारायण देव की भी उतनी ही श्रद्धा से पूजा की जाती है।
- **लोक विश्वास:** ये समुदाय भूत-प्रेत और तंत्र-मंत्र में गहरा विश्वास रखते हैं। नागदेवता से सुरक्षा हेतु बैगा विशिष्ट उपाय करते हैं। घरों की छतों और दीवारों पर **'क्षेत्र माता'** की आकृतियाँ बनाई जाती हैं, जो परिवार की व्याधियों और अनिष्ट से रक्षा करती हैं।

धार्मिक विश्वास एवं संस्कार (Religion and Rituals) जहाँ तक इस जाति के धार्मिक संस्कारों का प्रश्न है यह जाति पूर्णतः हिन्दू जाति से संबंधित है। इस जाति के कुल देवता–बुरा या बुढ़ा देव हैं। जिनके संबंध में यह विश्वास है कि ये साल के पेड़ में निवास करते हैं। बैगा साल वृक्ष की पूजा करते हैं यदि पूजा करते समय उनके हाथ में साज के पत्ते दे दिए जाएं और उनसे कोई बात पूछी जाए तो वे कभी झूठ नहीं बोलते। इन देवताओं की पूजा जेठ के महीने में बकरी की बलि देकर महुआ की शराब चढ़ाकर बैगा करता है। भूत-प्रेत में इनका विश्वास है। नागदेव से बचने के लिए बैगा कई उपाय करता है। हर घर की छप्पर पर उसके आगे-पीछे देवी माता (**क्षेत्र** माता) की आकृतियाँ दीवारों पर बनी दिखती हैं, जो आदि-व्याधि से इन परिवारों की रक्षा करती हैं। उनके दुल्हादेव और बड़ादेवा को एक मुर्गी और एक बोतल दारू की पूजा चाहिए तो

भवानी माता को चाहिए पूरा एक बकरा और दारू की बोतल। बाघेश्वरी और नागवंशी संतुष्ट होते हैं, एक सुअर और दो बोतल दारू से तो अजादी, मुर्गी और दो बोतल दारू से संतुश्ट हो जाती है। देवी-देवताओं की पूजा पुरूष ही करते हैं, स्त्रियां नहीं, फिर चाहे वे "खेर महारानी" ही क्यों न हो।

जादू-टोना: ये झाड़-फूँक और ओझा (गुनिया) के ज्ञान पर अटूट श्रद्धा रखते हैं। बीमारियों और सर्पदंश का इलाज मंत्रों द्वारा करने का प्रयास करते हैं। सिंह (1977) ने सहरिया बैगा चेरो एवं खरिया जनजाति का अध्ययन किया है। इसके अनुसार जनजातियों में भूत-प्रेतों के प्रति दृढ़ विश्वास है। रोगों को वे प्रेतों की अप्रसन्नता का प्रतीक समझते हैं। भूत-प्रेतों को प्रसन्न करने के लिए ओझा बुलाये जाते हैं। ओझा अनेक प्रकार के उपचारों और निरर्थक शब्दों द्वारा प्रेत का आह्वान करते हैं। प्रेत रोग ग्रस्त व्यक्ति के माध्यम से बोलता है। वह अपनी अप्रसन्नता का कारण बतलाता है कि प्रेत किस भेंट से प्रसन्न होगा। मुर्गा और शराब प्रेत को प्रसन्न करने के मुख्य साधन है।

शौक-

बैगा लोग जंगली पशु-पक्षियों का शिकार करते हैं। इसके लिए गांव के सभी जवान पुरुष एक साथ निकलते हैं।शिकार के बाद जानवरों को अलग-अलग हिस्सों में बाँटा जाता है। सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार, हर किसी को उसका हिस्सा मिलता है। निशाना साधना उनका कौशल है और यह आम तौर पर प्रभावी होता है। बैगा लोग जंगल की अन्य चीज़ों, जैसे गीरों या कांदा आदि का भी उपयोग करते हैं। पक्षियों को पकड़ने के लिए वे दूर तक जाल और अन्य उपकरण का प्रयोग करते हैं।वे शिकार से पहले एक पवित्र स्थल पर मलदाड तैयार करते हैं, जिसमें उनका चयन और आयोजन होता है।

अर्थव्यवस्था

बैगाओं की अर्थव्यवस्था पारंपरिक रूप से प्रकृति पर निर्भर रही है:

- **वर्तमान स्थिति:** सोनभद्र के बैगा अब स्थायी कृषि की ओर अग्रसर हैं। जिनके पास भूमि है, वे खेती करते हैं और जिनके पास नहीं है, वे कृषि श्रमिक या पुरोहित के रूप में अपनी जीविका चलाते हैं।
- **पुरोहिती:** गोंड जनजाति के यहाँ 'पुरोहित' का कार्य करना इनकी आय और सम्मान का एक प्रमुख स्रोत है।

- **धार्मिक मान्यता:** ये धरती माँ की छाती पर हल चलाना पाप समझते हैं, इसलिए ये वृक्षों को काटकर राख में बीज बोते हैं।
- **पोदा प्रथा:** संसाधनों के अभाव में जब एक किसान बैल उधार देता है और दूसरा उसके बदले मज़दूरी करता है, तो इसे 'पोदा' प्रथा कहा जाता है।

कृषि

बैगा अपनी कृषि में हल का प्रयोग नहीं करते थे क्योंकि उनकी मान्यता थी कि हल से धरती माँ की छाती पर घाव होगा और उसे पीड़ा होगी। इनकी कृषि "बैवार कृषि" है। वन की समतल भूमि के वृक्षों को काटकर गिरा दिया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में वृक्षों के सूखने पर आग लगा दी जाती है। आग के बुझने पर राख में कोदों, कुटकी, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का या अन्य किसी मोटे अनाज के बीजों को डाल दिया जाता है। वर्षा होने पर उनमें अंकुर निकल आते हैं। फसल के तैयार हो जाने पर उसी जगह गाह-उड़ा कर अनाज

तैयार कर लिया जाता है। गाहनी में बैलों की जगह औरतें ही काम करती है और वे ही पैरों या लकड़ी के मुगदर से अनाज को कूट लेती हैं। चूंकि बीस प्रतिशत आमदानी से गुजारा नहीं होता इसलिए बैगा लोगों ने कृषि अपनाई। यह उनके लिए परिस्थिति से समझौता है। फसलों में सबसे अधिक कोदो, चना, राई और रमतिल बोया जाता है। चूंकि बैगा खेती करने को अधिक उत्सुक नहीं रहते, इसलिए कृषि सामग्री का अभाव भी एक समस्या है, जिसने "पोदा" प्रथा को जन्म दे दिया है। अनेकों बैगा बिना बैलों के ही कृषि करते हैं। फलस्वरूप उन्हें बैल उधार लेने पड़ते हैं। कभी-कभी बैल जोड़ी तो होती है पर मजदूर नहीं मिलते।

ऐसी परिस्थिति में बैल वाला कृषक एक दिन के लिए अपनी बैल जोड़ी दे देता है। इसके बदले लेने वाला कृषक पांच दिनों के लिए मजदूर की व्यवस्था कर देता है।

अधिकाँश किसान मोटे अनाज के बीज बोते हैं बैगा लोगों ने स्थानान्तरण कषि को अपनाई है। यह उनके लिए परिस्थितियों के अनुरूप एक उपयुक्त व्यवस्था है। अन्य फसलों की कटाई के बाद उसी स्थान पर मक्का उगाकर अनाज तैयार किया जाता है। साहकारी कार्यों में बैल के स्थान पर महिलाएं ही कार्य करती हैं तथा पाषण लकड़ी के उपकरणों की सहायता से अनाज कूटती हैं। बैगा समुदाय के पास कषि उपकरण परियाप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते हैं। बैगा लोग कच्छारों में मोटे अनाज की खेती करते हैं। कच्छारों में मुख्य रूप से ज्वार कोवा बाजरा और तिल की खेती की जाती है। खेती करने के लिए उपकरणों की कमी है। इसी परिस्थिति के कारण उधार पर बैल लेने की प्रथा का विकास हुआ है। अनेक बैगा कृषक स्वयं के पास बैल न होने के कारण उधार पर प्राप्त बैल से ही कषि करते हैं। फलस्वरूप बैल देने वाला कृषक एक दिन के लिए अपनी कृष्षि कार्य करता है। इस प्रकार की व्यवस्था बैगा जन जाति की आर्थिक परिस्थिति और कृष्षि व्यवस्था को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

अनाजों में ज्वार बाजरा, मक्का राई और शमतिला इनकी कृषि कृत उपजें एवं भोजन का महत्वपूर्ण भाग हैं। मकका चावल कुटकी या ज्वार से वे पेय भी बनाते है। मेहमान नवाजी में पेय सबसे पहले दी जाती है तेदू या आम के पत्तों में तंाबाकू भरकर धूम्रपान किया जाता है। बैगा लोगों को जंगली बूटियों की पहचान होती है और उनको पाने के लिए बड़ी कठिनाई पार करने को तैयार रहते है। जंगली जानवरों का आखेट और मछली मारना बैगा युवकों का प्रिय मनोरंजन है। **आर्थिक ढाँचा एवं आय-व्यय का विश्लेषण--** बैगाओं की अर्थव्यवस्था आज भी लघु वनोपज और मज़दूरी पर टिकी है।

- **व्यय का वितरण:** बैगा अपनी आय का लगभग **68% भोजन** पर, 20% कपड़ों पर और शेष व्यय तंबाकू, शराब एवं मिर्च-मसालों पर करते हैं।
- **ऋणग्रस्तता:** सीधा जीवन होने के बावजूद विवाह या मृत्यु के समय इन्हें साहूकारों और सूदखोरों से ऋण लेना पड़ता है, जो इनके शोषण का मुख्य कारण है।
- बैगा जनजाति का जीवन सादगी और प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य का उदाहरण है। जहाँ एक ओर वे स्वयं को पृथ्वी का प्रथम मानव (आदि पुरुष) मानते हैं, वहीं दूसरी ओर आर्थिक रूप से वे आज भी साहूकारों के 'महाजनी विषधर' से त्रस्त हैं। उनकी 'बेवार' कृषि से 'मैदानी कृषि' की ओर बढ़ते कदम उनके सांस्कृतिक परिवर्तन के साक्षी हैं।

बैगा लोगों का जीवन अत्यंत सादा होता। आर्थिक सम्पन्नता की आकांक्षाए लगभग नहीं है। बाजार गया बैगा पैसे को जल्दी से जल्दी खर्च कर घर लोटना पसंद करता है। विवाह के अवसर पर वह हाथी पर बैठना अवश्य पसंद करता है, परन्तु आज की दरिद्रावस्था में वह खटिया का हाथी बनाकर आत्मसंतोष करता है। बैगा किसी भी बंधन को पंसद नहीं करते फिर चाहे वह सम्पत्ति का बंधन ही क्यों न हो। यही कारण है कि वे जमीन के स्वामित्व का दायित्व आज भी नहीं निभा पाते हैं। लघु वनोपजों पर उनकी अर्थ व्यवस्था आज भी बहुत अधिक आश्रित है।

बैगा जाति की व्यावसायिक स्थिति की चर्चा करते हुए रसेल ने लिखा है कि इनका मूल व्यवसाय खेती करना है। यह जाति आग लगाकर जंगल के हिस्से को जला देती है और राख से उपजाऊ हो गई जमीन को पानी बरसने पर बीज बोती और जोतती है। यद्यपि वर्तमान जंगल व्यवस्था में इसकी स्वीकृति नहीं रह गई है। सोनभद्र में निवास करने वाली बैगा उपजाति जिनके पास भूमि है उस पर खेती करती है तथा पुरोहित का कार्य करती है।

आर्थिक निर्भरता के मुख्य स्रोत कृषि कार्य, पशुपालन, मुर्गीपालन, दैनिक मजदूरी, कुशल कारीगरी जंगल की लकड़ी, ओझ, वैस या जड़ी बूटी का कार्य, नौकरी (सरकारी या प्राइवेट) है। महिलाओं का मुख्य व्यवसाय घास काटना, लकड़ी कारना, तेंदू पत्नासंग्रहण, महुमा संग्रहण, गौद संग्रहण, कृषिक या कृषक मजदूरी है जो इनकी जीविका का प्रमुख आच्चार है। शहद एकत्र करना करना, और जड़ी बूटी संग्रहण में महिलायें भी सहयोग करती है। शिकार करने और मजदूरी का कार्य करने में महिलाये भी से लग्न होती है।

बैगा जनजाति पर आधुनिकीकरण एव नगरीकरण का प्रभाव भी हावरंगत होता है। विभिन्न व्यवसायों को जैसे जड़ी बूटी, सब्जी, महालयां, निर्माण कार्य सद्धि व्यवसाय करने लगे है। रंगाई किलाई और कढ़ाई आदि व्यवसायो को भी करने लगे।

आर्थिक निर्भरता के मुख्य स्रोत– कृषि कार्य, पशुपालन, मुर्गीपालन, दैनिक मजदूरी, कुशल कारीगरी, जंगल की लकड़ी, ओषधि, वैद्य या जड़ी-बूटी का कार्य, नौकरी (सरकारी या प्राइवेट) हैं। महिलाओं का मुख्य व्यवसाय घास काटना, लकड़ी काटना, तेंदू पत्ता संग्रहण, महुआ संग्रहण, गोंद संग्रहण, कृषि या कृषक मजदूरी है, जो उनकी जीविका का प्रमुख आधार है। शहद एकत्र करना और जड़ी-बूटी संग्रहण में महिलाएँ भी सहयोग करती हैं। शिकार करने और मजदूरी का कार्य करने में महिलाएँ भी संलग्न रहती हैं।बैगा जनजाति पर आधुनिकीकरण एवं नगरीकरण का प्रभाव भी हो रहा है। विभिन्न व्यवसायों को जैसे जड़ी-बूटी, सब्ज़ी, महालयाँ, निर्माण कार्य आदि व्यवसाय करने लगे हैं। रंगाई-धुलाई और कढ़ाई आदि व्यवसायों को भी करने लगे हैं।

बैगा खेती करके, जंगल में काम करके और मजदूरी करके जितना कुछ कमाते हैं, उसका अड़सठ प्रतिशत तक तो भोजन में ही व्यय हो जाता है। लगभग बीस प्रतिशत कपड़ों पर व्यय होता है। मिट्टी के तेल पर दो प्रतिशत, तम्बाकू और बीड़ी पर तीन प्रतिशत और लगभग उतना ही शराब पर। बाकी चार प्रतिशत व्यय नमक-मिर्च मसाले आदि पर होता है। अपेक्षाकृत समृद्ध बैगा की आय पैंसठ प्रतिशत खेती और दो प्रतिशत जंगलों में काम करने से, तेरह प्रतिशत अन्य मजदूरी से और दो प्रतिशत जानवरों से प्राप्त होता है। सीधा सा जीवन जीने के बाद भी परिवार में शादी विवाह या मौत हो जाने पर उनके कर्ज लेना पड़ता है। कर्ज देने वाले कभी कभार ही उनके रिश्तेदार होते हैं, अधिकतर वे सूदखोर व साहूकार होते हैं।

ब्लूम्स फील्ड ने बैगा के अर्थ का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया था वह बड़ी मात्रा में आज भी सत्य है:-

1. दहिया (धेवर) काटना और खेती करना।
2. गांव के ओझा का कार्य करना, झांड़-फूंक करना, जंगली जड़ी-बूटियों को एकत्र करना और उपचार करना।
3. बांस की चटाई और टोकनियां बनाना।
4. जंगल से शहद और हर्रा इकट्ठा करना और बेचना।
5. मजदूरी करना।
6. जंगल से कन्द मूल, फल इकट्ठा करना, शिकार करना और मछली पकड़ना।

तालिका: बैगा जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

क्र.सं.	**आर्थिक/सामाजिक मानक**	**वर्तमान स्थिति (सर्वेक्षण के आधार पर)**	**प्रमुख टिप्पणी/निष्कर्ष**
1	**आवास का प्रकार**	**85-90% कच्चे मकान** (मिट्टी और घास-फूस)	आधुनिक पक्के मकानों का अभाव, केवल सरकारी आवास (पीएम आवास) से बदलाव।
2	**साक्षरता दर**	**अत्यंत न्यून** (पुरुष: ~40%, महिला: ~15%)	नई पीढ़ी स्कूलों की ओर बढ़ रही है, पर बड़े बुजुर्ग अभी भी निरक्षर हैं।
3	**आय का मुख्य स्रोत**	**मज़दूरी और वनोपज संग्रह** (65-70%)	कृषि (20%) और पशुपालन (10%) सहायक व्यवसायों के रूप में हैं।
4	**आय का वितरण**	**68% आय केवल भोजन पर व्यय**	विलासिता की वस्तुओं के बजाय बुनियादी जरूरतों पर खर्च अधिक है।
5	**कृषि पद्धति**	**पारंपरिक एवं पिछड़ी** (कम संसाधनों वाली)	हल के बजाय हाथ के औजारों का प्रयोग; सिंचाई सुविधाओं की भारी कमी।
6	**स्वास्थ्य एवं उपचार**	**झाड़-फूँक और जड़ी-बूटी** (75%)	अस्पताल केवल गंभीर स्थितियों में ही जाते हैं; 'गुनिया' पर अटूट विश्वास।
7	**ऋणग्रस्तता**	**साहूकारों और सूदखोरों पर निर्भरता**	शादी-ब्याह और मृत्यु संस्कारों के लिए कर्ज लेना एक बड़ी समस्या है।
8	**स्वच्छता/पेयजल**	**प्राकृतिक स्रोत (कुआँ, झरना, नदी)**	हैंडपंपों की संख्या पर्याप्त नहीं है; स्वच्छता के प्रति जागरूकता की कमी।
9	**विवाह प्रथा**	**उपजाति के भीतर अंतर्विवाह**	बाल विवाह की छिटपुट घटनाएं; 'मात्रकुल' विवाह की स्वीकार्यता।
10	**सांस्कृतिक भागीदारी**	**कर्मा नृत्य और उत्सवों में सक्रिय**	सामाजिक एकता अत्यंत सुदृढ़ है; लोक परंपराओं का पालन अनिवार्य।

तालिका: बैगा जनजाति की कृषि प्रणाली एवं मुख्य उपज का विश्लेषण

क्र.सं.	कृषि के घटक	विवरण एवं विशिष्टताएँ
1	**खेती का प्रकार**	**'बेवार' (Bewar) या दहिया खेती:** यह एक प्रकार की स्थानांतरित कृषि है। इसमें जंगल के एक हिस्से के वृक्षों को काटकर जला दिया जाता है और उसकी राख पर बीज बोए जाते हैं।
2	**मुख्य अनाज (खाद्यान्न)**	**कोदो (Kodo) और कुटकी (Kutki):** यह बैगाओं का प्रधान भोजन है। इसके अतिरिक्त मक्का, ज्वार और बाजरा का उत्पादन भी प्रमुखता से किया जाता है।
3	**तिलहन एवं दलहन**	**रामतिल (Ramtil), राई और चणा:** ये फसलें मुख्य रूप से व्यावसायिक दृष्टि से और भोजन के पूरक के रूप में उगाई जाती हैं।
4	**कृषि उपकरण**	**हल का निषेध:** बैगाओं की पारंपरिक मान्यता है कि हल चलाने से धरती माता की छाती पर घाव होता है, इसलिए वे कुल्हाड़ी और खुरपी जैसे हाथ के औजारों का प्रयोग करते हैं।
5	**सिंचाई एवं उर्वरक**	**पूर्णतः वर्षा पर निर्भर:** इनकी खेती मानसून पर आधारित है। जलाए गए वृक्षों की राख ही प्राकृतिक उर्वरक (खाद) का कार्य करती है।
6	**श्रम विभाजन**	**महिलाओं की प्रधानता:** फसल की कटाई, गाहनी (अनाज अलग करना) और कूटने का कार्य मुख्य रूप से महिलाएं करती हैं। वे लकड़ी के 'मुगदर' से अनाज कूटती हैं।
7	**वनोपज (सहायक उपज)**	**महुआ, शहद, हर्रा और जड़ी-बूटियाँ:** खेती के साथ-साथ ये वनोपज बैगाओं की अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ हैं।
8	**विशिष्ट सामाजिक प्रथा**	**'पोदा' (Poda) प्रथा:** संसाधनहीनता की स्थिति में बैलों या मज़दूरी की आपसी अदला-बदली कर खेती का कार्य संपन्न करना।

बैगा जनजाति के लिए कृषि केवल आजीविका का साधन नहीं बल्कि एक **धार्मिक संस्कार** है। हालाँकि, वर्तमान वन कानूनों और सरकारी पाबंदियों के कारण बैगा अब धीरे-धीरे 'बेवार' कृषि छोड़कर मैदानी और स्थायी कृषि की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ वे अब हल और आधुनिक बीजों का प्रयोग भी करने लगे हैं।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के दौरान सोनभद्र की दुद्धी तहसील के छह ग्रामों (नेमना, बैरखड़, कुदरी, अजनीगुरा, दीघुल और गरदरवा) के गहन अध्ययन, व्यक्तिगत अवलोकन और साक्षात्कारों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं:

1. **सांस्कृतिक निरंतरता:** बैगा जनजाति आधुनिकता के दौर में भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए हुए है। बैरखड़ और कुदरी जैसे गाँवों में होली का पर्व निर्धारित समय से 5 दिन पूर्व मनाने की परंपरा और ढोलक की थाप पर लोकगीत उनके जीवंत इतिहास का प्रमाण हैं।

2. **शिक्षा एवं जागरूकता का अभाव:** 30% चयनित परिवारों के साक्षात्कार से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा का स्तर अभी भी संतोषजनक नहीं है। विशेषकर महिलाओं में साक्षरता की कमी के कारण वे सरकारी योजनाओं और एनजीओ (NGO) के लाभों से अनभिज्ञ हैं।
3. **स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ:** व्यक्तिगत अवलोकन में पाया गया कि बैगा परिवारों में आज भी आधुनिक चिकित्सा के बजाय 'बैगा' (पुजारी/ओझा) और पारंपरिक जड़ी-बूटियों पर निर्भरता अधिक है। कुदरी जैसे गाँवों में महिलाओं की संख्या अधिक होने के बावजूद प्रसूति सहायता और बाल स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक है।
4. **आर्थिक पिछड़ापन:** 'बेवर' खेती पर कानूनी प्रतिबंध और भूमि की कमी के कारण अधिकांश परिवार कृषि मजदूरी पर आश्रित हैं। रोजगार के स्थायी साधनों की कमी के कारण आर्थिक गतिशीलता अत्यंत धीमी है।
5. **एनजीओ और शासन की भूमिका:** आंकड़ों का विश्लेषण दर्शाता है कि स्वयंसेवी संस्थाओं (NGOs) की पहुँच अत्यंत सीमित है। ग्रामीण विकास की योजनाएं भौगोलिक दुर्गमता के कारण इन परिवारों तक पूर्णतः नहीं पहुँच पा रही हैं।

सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर बैगा जनजाति के उत्थान हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं:

- **विशिष्ट शिक्षा केंद्र:** इन ग्रामों में 'आश्रम पद्धति' के विद्यालयों का विस्तार किया जाए जहाँ बैगा बच्चों को उनकी अपनी बोली और परिवेश में प्राथमिक शिक्षा दी जा सके।
- **मोबाइल हेल्थ यूनिट:** दुर्गम क्षेत्रों (जैसे अजनीगुरा और गरदरवा) के लिए मोबाइल डिस्पेंसरी की व्यवस्था की जाए, ताकि उन्हें झाड़-फूंक के बजाय आधुनिक चिकित्सा सुलभ हो सके।
- **पारंपरिक कौशल का व्यवसायीकरण:** बैगा जनजाति का जड़ी-बूटियों (Ethnobotany) और बाँस शिल्प का ज्ञान अद्वितीय है। इनके उत्पादों को 'मार्केट लिंकेज' प्रदान कर उनकी आय बढ़ाई जा सकती है।
- **कौशल विकास एवं स्वरोजगार:** म्योरपुर ब्लॉक में विशेष प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए जाएं जो जनजातीय युवाओं को आधुनिक खेती और लघु उद्योगों के लिए तैयार करें।
- **सांस्कृतिक पर्यटन:** बैरखड़ जैसे गाँवों की अनूठी होली परंपरा और कर्मा नृत्य को 'सांस्कृतिक पर्यटन' से जोड़कर इस क्षेत्र को एक नई पहचान और आर्थिक संबल दिया जा सकता है।

उपसंहार

अंततः यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि बैगा जनजाति केवल एक ऐतिहासिक अवशेष नहीं, बल्कि हमारे देश की प्राचीनतम सभ्यता की जीवित संवाहक है। उनके विकास का मार्ग उनके सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट करके नहीं, बल्कि उन्हें सम्मान देते हुए मुख्यधारा से जोड़ने में निहित है। सोनभद्र की यह भूमि अपनी नदियों और घाटियों के साथ इन आदिवासियों के सुरक्षित भविष्य की प्रतीक्षा कर रही है।

विषय पर अध्ययन के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि आधुनिक के इस दौर में जनजातीय समाज में चेतना विकसित हुई है। जिसके कारण ही जनजातीय समाज सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक बदलावों से गुजर रहा है। लेकिन बैगा जनजाति समुदाय अभी भी अपनी परंपरा-विरासत को संजोए हुए है। यह बात सत्य है कि इनमें क्षरण दृष्टिगोचर हुआ है, लेकिन आज भी ये परंपराएँ अनवरत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं।

विश्लेषित अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद में निवास करने वाले बैगा समुदाय के संबंध में गहन समाजशास्त्रीय एवं मानवशास्त्रीय शोध की आवश्यकता है। यह शोध इस दिशा में किया गया वैयक्तिक समाजशास्त्रीय प्रयास है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **अशोक, ए. एवं लक्ष्मैया, पी.वी. (2018):** *ट्राइब्स ऑफ इंडिया*, वॉल्यूम-1 एवं 11, तेलुगु एकेडमी पब्लिकेशन।
2. **एक्का, विन्सेंट एवं किशोर, सृजन:** *बैगा जनजाति का अध्ययन*, पृष्ठ संख्या 78-79।
3. **एल्विन, वेरियर (1961):** *ए न्यू डील फॉर ट्राइबल इंडिया*, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
4. **एल्विन, वेरियर (2016):** *द बैगा*, ज्ञान पब्लिकेशन (मूल संस्करण 1939)।
5. **गुहा, बी.एस. (1938):** *द रेशियल एलिमेंट्स ऑफ इंडिया*, बॉम्बे पॉपुलर प्रकाशन।
6. **गौतम, आर.के. (2011):** *बैगास: हंटर-गैदरर्स ऑफ सेंट्रल इंडिया*, रीडवर्दी पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या 79।
7. **जानाह, एस. (2003):** *ट्राइब्स ऑफ इंडिया*, ओ.यू.पी. इंडिया, पृष्ठ 127-129।
8. **झा, दया शंकर (1958):** *ट्राइब्स इकोनॉमी: एन इकोनॉमिक स्टडी ऑफ द बैगा*, भारतीय आदिम जाति सेवक संघ।
9. **तिवारी, शिवकुमार (1984):** *मध्य प्रदेश के आदिवासी*, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ 1।
10. **देशपांडे, मेधा (2017):** *बैगा जनजाति का समाजशास्त्रीय अध्ययन*, आयु पब्लिकेशन।
11. **पाठक, के.एन. (1985):** *ए स्टडी ऑफ सोशल एंड इकोनॉमिक लाइफ ऑफ शिड्यूल्ड ट्राइब्स इन हिल एरिया*।
12. **पुर्णिमा एवं आनंद, ए. (2024):** *ट्राइब्स ऑफ इंडिया*, आई.आई.पी. इटिरेटिव इंटरनेशनल पब्लिकेशन, पृष्ठ 55-61।
13. **बंरा, एनाबेल बेंजामिन (2021):** *द बैगास ऑफ सोनभद्र*, इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली।
14. **भारद्वाज, आर. एवं चारुकला (2022):** *ट्राइब्स ऑफ इंडिया*, वितस्ता पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
15. **मजूमदार, डी.एन. (1944):** *द फैक्टर ऑफ प्रिमिटिव ट्राइब्स*, लखनऊ यूनिवर्सिटी।
16. **मजूमदार, डी.एन. (1961):** *रेसेस एंड कल्चर्स ऑफ इंडिया*, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, पृष्ठ 367।
17. **मिश्र, आर.पी. (2015):** *बैगा जनजाति का आर्थिक अध्ययन*, कला प्रकाशन, पृष्ठ 103-105।
18. **राय, नरवदेश्वर (1976):** *ट्राइब्स लाइफ ऑफ मिर्जापुर*।
19. **शंखधर, एस.एम. (1974):** *कास्ट इंटरेक्शन इन ए विलेज ट्राइब्स*, नई दिल्ली।
20. **श्रीमंत, चंदन (2024):** *बैगा ट्राइब्स*।
21. **श्रीवास्तव, ए.आर.एन. (1990):** *ट्राइब्स ऑफ उत्तर प्रदेश*।
22. **सोनी, अमित (2015):** *बैगा: ए विजुअल एथनोग्राफी*, इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी, अमरकंटक।
23. **स्वामी राजेश कुमार (2015):** *बैगा जनजाति का आर्थिक अध्ययन*, कला प्रकाशन।

परिशिष्ट (Appendix)

साक्षात्कार अनुसूची(Interview Questionnaire) (बैगा जनजाति के सामाजिक-आर्थिक अध्ययन हेतु)

भाग 1: सामान्य परिचय

1. उत्तरदाता का नाम: ____________________________
2. लिंग (पुरुष/महिला): ____________________________
3. आयु: ____________ वर्ष
4. ग्राम का नाम: ____________________________
5. परिवार के सदस्यों की कुल संख्या: ____________
6. शैक्षिक योग्यता: (निरक्षर / प्राथमिक / माध्यमिक / अन्य) ____________

भाग 2: आर्थिक स्थिति एवं कृषि 7. आपकी आय का मुख्य साधन क्या है?

- (क) खेती (ख) मज़दूरी (ग) वनोपज संग्रह (घ) अन्य

8. क्या आप अभी भी 'बेवर' (दहिया) खेती करते हैं? (हाँ / नहीं)
9. आपके पास कुल कितनी कृषि भूमि है? ____________
10. आप मुख्य रूप से कौन सी फसलें उगाते हैं? (कोदो, कुटकी, मक्का, ज्वार, अन्य)
11. क्या आपके पास खेती के लिए बैल और हल हैं? ____________
12. क्या आप खेती के लिए साहूकार से ऋण लेते हैं? ____________

भाग 3: सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन 13. आपके परिवार में बच्चों का नामकरण किस आधार पर किया जाता है? 14. आपकी उपजाति कौन सी है? (बिंझवार / नरोटिया / भरोटिया / अन्य) 15. क्या आपके समाज में विधवा-विवाह प्रचलित है? ____________ 16. आप किन प्रमुख देवताओं की पूजा करते हैं? ____________ 17. बीमारी की स्थिति में आप सबसे पहले किसके पास जाते हैं? * (क) सरकारी अस्पताल (ख) गुनिया/ओझा (ग) जड़ी-बूटी वैद्य

भाग 4: सरकारी योजनाओं एवं जागरूकता का प्रभाव

18. क्या आपके पास राशन कार्ड/आधार कार्ड उपलब्ध है? ____________

19. क्या आपको प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ मिला है? ____________

20. क्या कोई स्वयंसेवी संस्था (NGO) आपके गाँव में कार्य कर रही है?

21. आपके क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या क्या है? (सड़क, पानी, शिक्षा, रोज़गार)

.---